[redacted]

बुद्धि का विभाजन

प्रत्येक समूह या समाज में कुछ ऐसे बच्चे, बालक या व्यक्ति अवश्य ही मिलते हैं जिनकी बुद्धि सामान्य से कम या अधिक होती है। ऐसे बच्चों को क्रमशः मन्दबुद्धि बालक एवं श्रेष्ठ बालक कहते हैं। इनकी अपनी-अपनी विशेषताएँ तथा समस्याएँ होती हैं। इनकी चर्चा अपेक्षित है।

मन्दबुद्धि बालक (Mentally Retarded Child)

ऐसे बालक या व्यक्ति जिनमें मानसिक विकास की प्रक्रिया प्रारम्भिक वर्षों में ही अवरुद्ध हो जाती है और वे स्वयं इस योग्य नहीं रह जाते हैं कि अपना कार्य तथा अपनी व्यवस्था स्वयं कर सकें, मानसिक रूप से मन्द कहे जाते हैं। इस समस्या को मानसिक मन्दता (Mental Retardation) कहा जाता है। ऐसे व्यक्तियों की मानसिक आयु कम होती है तथा विकास की प्रक्रिया अपेक्षाकृत शीघ्र ही समाप्त हो जाती है। **थॉमसन** (1951) के अनुसार इनमें आयु में वृद्धि के साथ मानसिक ह्रास की गति सामान्य व्यक्तियों की तुलना में अधिक होती है। इन्हें कई वर्गों में विभक्त किया जा सकता है; जैसे—

जड़बुद्धि (Idiot)—इनकी बुद्धि लब्धि शून्य से 20 तक हो सकती है। ऐसे व्यक्ति अपना कोई भी कार्य नहीं कर पाते हैं। ये व्यक्ति संकट को समझ नहीं पाते हैं और इनके लिए गाड़ी से भिड़ जाना, हाथ जला लेना सामान्य बात है।

मूर्ख (Imbecile)—इनकी बुद्धि लब्धि 20 से 59 तक हो सकती है। ये लोग थोड़ा-बहुत अपना कार्य कर सकते हैं। इनमें पराश्रितता पायी जाती है, फिर भी रोजाना की जिन्दगी के कार्य स्वयं कर सकते हैं तथा इन्हें समुचित प्रशिक्षण देकर मोटे कार्यों के योग्य बनाया जा सकता है।

Scanned with CamScanner

मूढ़ (Moron)—इनकी बुद्धि लब्धि 60 से 69 तक हो सकती है। इन्हें समुचित प्रशिक्षण देकर जीविकोपार्जन के योग्य बनाया जा सकता है। ऐसे व्यक्तियों के सुधार के लिए प्रायः समय-समय पर शोधकार्य एवं अन्य कार्यक्रम होते हैं। आधुनिक समाज में इनके लिए सुधार-गृहों की भी स्थापना हो रही है। इनकी शारीरिक संरचना सामान्य लोगों से भिन्न तो होती ही है, इनके सामाजिक व्यवहार भी असंगठित, अनियमित एवं अपरिपक्व होते हैं।

मानसिक मन्दता के लक्षण (Symptoms of Mental Retardation)

मानसिक मन्दता से ग्रस्त व्यक्तियों को लक्षणों के भी आधार पर वर्गीकृत कर सकते हैं; यथा—

1. मंगोलियन कपाल (Mongolian Cephalic)—ऐसे व्यक्तियों का बाह्य शारीरिक आभास मंगोल प्रजाति वालों जैसा होता है, जैसे—धारीदार होंठ, मोटी पलकें, छोटी गर्दन, मोटी आवाज तथा दबी हुई नाक आदि। **पैनरोज** (1963) का निष्कर्ष है कि अधिक उम्र के माता-पिता से उत्पन्न बच्चों में ये लक्षण मिलने की सम्भावना अधिक रहती है। यदि पीयूष ग्रन्थि (Pituitary Gland) से स्राव अनियमित और मन्द हो जाये तो भी यह समस्या पैदा हो जाती है।

2. लघु कपाल (Micro Cephalic)—ऐसे व्यक्तियों का सिर छोटा तथा माथा दबा होता है। इनकी बुद्धि लब्धि 25 तक हो सकती है। ये स्वयं अपने लिए तथा दूसरों के लिए भी समस्या होते हैं। कुछ भी कर पाना इनके लिए सम्भव नहीं है। इन्हें जड़बुद्धि भी कहते हैं।

3. बौनापन (Cretinism)—बौने व्यक्तियों में यह लक्षण पाया जाता है। ऐसे व्यक्तियों की ऊँचाई लगभग तीन फीट, हाथ-पैर काफी छोटे तथा धड़ अधिक चौड़ा होता है। इनकी बुद्धिलब्धि लगभग 50 से 60 तक पायी जाती है। थायरॉइड ग्रन्थि से निकलने वाले रसद्रव थायरॉक्सिन की कमी के कारण ऐसा होता है। ये व्यक्ति काफी सीमा तक प्रशिक्षण योग्य होते हैं।

4. जलीय कपाल (Hydro Cephalic)—ऐसे व्यक्तियों का सिर बहुत बड़ा होता है तथा तिकोना दिखता है। इनकी बुद्धिलब्धि लगभग 50 से 70 तक हो सकती है। ये प्रशिक्षण योग्य होते हैं एवं जीविकोपार्जन भी कर सकते हैं।

Scanned with CamScanner